वैश्वीकरण एवं मुस्लिम महिलायें: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

(आगरा नगर के विशेष सन्दर्भ में)

दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग
आगरा की पीएच.डी. (समाजशास्त्र) की उपाधि हेतु
संशोधित अनुसंधान की
रूपरेखा
(2019)

शोध पर्यवेक्षकः–

प्रो0 पूर्णिमा जैन
विभागः समाजशास्त्र एवं
राजनीति विज्ञान

शोधार्थिनीः–

श्रीमती शवनम
नामांकन सं0 – 173454

संकाय प्रमुख :–

प्रो0 कमलजीत संधू
समाज विज्ञान संकाय

विभागाध्यक्षः–

प्रो0 पूर्णिमा जैन
विभाग– समाजशास्त्र
एवं राजनीति विज्ञान

दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)
दयालबाग, आगरा– 282005

प्रस्तावना

वैश्वीकरण के प्रारम्भ से (पिछले तीन दशकों के दौरान) विभिन्न देशों के लोगों के जीवन के सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक पक्ष में बदलाव देखा गया है। कम्प्यूटर, इण्टरनेट, फैक्स मशीनों, मोबाइल, टेलीकम्यूनिकेशन संचार के आसान तरीके के प्रावधानों से लोगों में एक नवीन तरह की विश्वसनीयता जगी है। इन संचार की अग्रिम प्रौद्योगिकी के माध्यम से एक व्यक्ति की दूसरे व्यक्तियों से दूरी कम हुई है तथा सम्बन्धों का क्षेत्र विस्तृत हुआ है।

वैश्वीकरण विभिन्न देशों के मध्य परस्पर निर्भरता, अन्तःस्थापितता तथा एकीकरण को बढ़ाने की प्रक्रिया है जो वैश्विक संस्कृति का एकीकरण करता है। वैश्वीकरण में तकनीकी का स्वतन्त्र बहाव, विश्व में ज्ञान का प्रसार, सामाजिक सम्बन्धों में विस्तार पक्ष भी सम्मिलित है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया में एक प्रमुख घटक प्रौद्योगिकी सूचना तकनीकी है। सूचना समाज के उदय के कारण अल्पसंख्यक तथा कमजोर वर्ग के लोगो में एक नवीन क्रान्तिकारी चेतना उभरी है **(सिंह 2000)** जिसने समय व स्थान के बीच की दूरी को सिमटा दिया है। इसके कारण दुनिया के लोग कभी भी अपनी इच्छानुसार एक दूसरे से सम्पर्क कर सकते है। वैश्वीकरण ने दुनिया के लगभग प्रत्येक समाज, प्रत्येक वर्ग को प्रभावित किया है। विभिन्न समाजों के विभिन्न वर्गों पर इसका भिन्न–भिन्न प्रभाव पड़ रहा है इसमें एक वर्ग मुस्लिम महिला भी है।

21वीं सदी से पहले सामान्यतः मुस्लिम महिलाओं की स्थिति अत्यन्त दयनीय थी, सामान्यतः वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं थी। शिक्षा का स्तर, रहन सहन का स्तर आदि वर्तमान समय की अपेक्षा अत्यन्त निम्न था **(गोपाल सिंह कमेटी प्रतिवेदन, 1983)** उनका कार्य घर तक सीमित था, वह सामान्यतः बाजार में खरीददारी भी नहीं करती थी। लेकिन 21वीं सदी का युग परिवर्तन का युग है। मुस्लिम महिलाओं के सामाजिक विकास पर शिक्षा, आधुनिकीकरण, सूचना प्रोद्योगिकी, संचार, तथा विशेषकर वैश्वीकरण आदि कारकों का प्रभाव पड़ रहा है। वैश्विक संचार, नेटवर्क और क्रॉस सांस्कृतिक विनियम के आगमन के साथ मुस्लिम महिलाओं की स्थिति में बदलाव आ रहा है। मुस्लिम महिलाओं में उच्च गतिशीलता का गुण भी विकसित हो रहा है। संचार साधनो में बढ़ती सहभागिता संयुक्त परिवार का एकाकी परिवार में

परिवर्तन, खान पान की आदतो में परिवर्तन जैसे फास्टफूड रेस्तरा में भोजन खाना, जन्मदिन मनाना, शॉपिंग करना, पोशाक का परिवर्तित रूप, संस्कार परम्पराऐं मूल्यों में भी परिवर्तन देखा जा रहा है। मुस्लिम महिलाओं के परस्परागत दृष्टिकोण, आधुनिक नई सोच में परिवर्तित हो रहा है (तीन तलाक पर मुस्लिम महिलाओ द्वारा अपने अधिकारो के लिए कराया जाने वाला संशोधन – **द मुस्लिम वोमेन प्रोटेक्शन ऑफ राइट्स ऑन मैरिज एक्ट, 2019),** शैक्षिक सहभागिता में वृद्धि (सेन्सस 2011 में 50.3 प्रतिशत), स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता में वृद्धि तथा अपने अधिकारो के प्रति जागरूक हो रही है।

अवधारणात्मक तथा सैद्धान्तिक रूपरेखा

अवधारणात्मक व सैद्धान्तिक रूपरेखा को हमने दो भागों में प्रस्तुत किया हैः (अ) वैश्वीकरण (ब) सामाजिक आर्थिक विकास

(अ) वैश्वीकरण

वैश्वीकरण को भूमण्डलीकरण और जगतीकरण आदि नामों से भी जाना जाता है। इसकी शुरूआत 1990 में हुई यह एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसमें सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक, राजनीतिक आयाम सम्मिलित है। इन चार आयामों के दृष्टिकोण से वैश्वीकरण की परिभाषा इस प्रकार है–

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से वैश्वीकरण

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से भूमण्डलीकरण की अवधारणा को समाजशास्त्र में लाने का श्रेय गिड्डेन्स व रॉबर्स्टन को दिया जाता है।

गिड्डेन्स (1990) के अनुसार– ''विभिन्न लोगों एवं विश्व के विभिन्न क्षेत्रों के मध्य बढ़ती हुई पारस्परिकता ही वैश्वीकरण है यह पारस्परिकता सामाजिक आर्थिक सम्बन्धों में निहित होती है इसके समय एवं स्थान का कोई महत्व नहीं होता।''

रॉबर्स्टन (1992) के अनुसार– वैश्वीकरण में जो सार्वभौमिकता और स्थानीयता दिखाई देती है उन दोनों का विश्लेषण ही वैश्वीकरण है।

अर्थशास्त्रीय दृष्टिकोण से वैश्वीकरण – यह माल सेवा प्रौद्योगिकी और पूंजी के सीमा पर आन्दोलन में तेजी से वृद्धि के माध्यम से दुनिया भर में राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के बढ़ते आर्थिक परस्पर निर्भरता है जबकि वैश्वीकरण विज्ञान व प्रौद्योगिकी के तेजी से विकास और श्रम के सीमा पर विभाजन पर केन्द्रित है इसमें सभी प्रकार के उत्पादक गतिविधियों और विपणन और विज्ञान प्रौद्योगिकी के विकास में जानकारी के तेजी से बढ़ते महत्व से प्रेरित है। यह नई प्रौद्योगिकी के साथ –साथ नये आर्थिक सम्बन्ध राष्ट्रीय अन्तराष्ट्रीय कलाकारों की एक विस्तृत श्रंखला के प्रभाव में प्रेरित है जिसमें सरकारी, गैर सरकारी संगठनों, अन्तराष्ट्रीय संगठनों, व्यापार और श्रमिक आदि को संदर्भित करता है।

बेलेरस्टेन (1983) के अनुसार– ''वैश्वीकरण वह प्रक्रिया है जो पूंजीवाद के विस्तार एवं उसकी समृद्धि के कारण उत्पन्न हुई है।''

सांस्कृतिक दृष्टिकोण से वैश्वीकरण– इसमें राष्ट्रीय सीमाओं में विचारों दृष्टिकोणों, मूल्यों का तेजी से आदान प्रदान शामिल है, विचारों का यह साझाकरण आमतौर पर विभिन्न संस्कृतियों और जीवन के तरीकों के बीच एक अन्तःस्थापितता और बातचीत की ओर जाता है इसमें सामाजिक सम्बन्धों के विस्तार और तीव्र बनाने के लिए दुनिया भर के विचारों अर्थों मूल्यों के संचरण को सदंर्भित करता है इस प्रक्रिया को संस्कृतियों की सामान्य खपत से चिन्हित किया जाता है जो इण्टरनेट लोकप्रिय संस्कृति मीडिया अन्तर्राष्ट्रीय यात्रा से फैल गए है। संस्कृतियों का परिसंरचरण व्यक्तियों को राष्ट्रीय और क्षेत्रीय सीमाओं को पार करने वाले विस्तारित सामाजिक सम्बन्धों में भाग लेने में सक्षम बनाता है। सांस्कृतिक वैश्वीकरण में साझा मानदण्डों और ज्ञान का गठन शामिल है जिसके साथ लोग अपनी व्यक्तिगत और सामूहिक संस्कृति पहचान को जोडते है यह विभिन्न आबादी और संस्कृति के बीच बढ़ती अन्तः क्रिया को लाता है।

राजनीतिशास्त्रीय दृष्टिकोण से वैश्वीकरण– इसमें आकार और जटिलता दोनों में विश्वव्यापी राजनीतिक व्यवस्था के विकास को संदर्भित करता है राजनीतिक वैश्वीकरण के प्रमुख पहलुओं में से एक राष्ट्र राज्य के घटते महत्व और राजनीतिक दृश्य पर अन्य संगठनों का उदय

है जैसे संयुक्त राष्ट्र का निर्माण, WTO का निर्माण एवं इनका अस्तित्व राजनीतिक वैश्वीकरण के अन्तर्गत आते है।

गिलपिन (1987) के मतानुसार – वैश्वीकरण प्रक्रिया के तीव्रीकरण का मुख्य कारण है राजनीति। जब कोई राष्ट्र अपनी प्रभावकारी शक्ति से अन्य राष्ट्रो पर अपना वर्चस्व और आधिपत्य स्थापित कर लेता है तभी वह किसी विश्व व्यवस्था का भी निर्माण करता है एवं राष्ट्र राज्यों के मध्य अन्तःसम्बन्ध अन्तःक्रिया एवं अन्योन्याश्रिता की स्थापना होती है।

सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य

राबर्टसन (1992) ने ***वैश्विक संस्कृति सिद्धान्त*** के अन्तर्गत इमैनुएल वॉलरस्टीन व फ्रेड्रिक जेमसन जैसे अधिक भौतिकवादी उन्मुख सिद्धान्तकारों की तुलना में अधिक फिनोमेनॉलॉजी (प्रघटनात्मक) और मनोवैज्ञानिक सामाजिक दृष्टिकोण पर महत्वपूर्ण रूप से ध्यान केन्द्रित किया है। राबर्टसन के लिए आधुनिक (या उत्तर आधुनिक) युग का सबसे महत्वपूर्ण पहलू वह तरीका है जिसमें वैश्वीकरण के युग में वैश्विक चेतना विकसित हुई है। राबर्टसन ने इसके अन्तर्गत ''दुनिया के संपीडन और पूरी दुनिया की चेतना के गहन'' दोनों रूप वैश्वीकरण की प्रक्रिया में शामिल किया है रॉबर्टसन वैश्वीकरण में जीवन के विभिन्न स्वरूपों की तुल्नात्मक बातचीत करते हैं यह स्थानीय व वैश्विक स्तर की कभी दमनकारी तो कभी सहकारी ताकतों को सैद्धान्तिक आधार देने की एक सटीक अवधारणा है वैश्विक/स्थानीय, केन्द्रीय/बाहरी सार्वभौमिक विशिष्टवादी मॉडल को अपर्याप्त मानते हुए झूठे द्वन्द्वात्मक विरोध को अस्वीकार करता है।

अप्पादुराई (1999) के वैश्वीकरण के सैद्धान्तिक आधार का विश्लेषण सांस्कृतिक पक्ष के साथ अधिक जुडा है। अप्पादुराई यह मानते है कि ''विश्व के क्षेत्र आपस मे पहले से ही अन्तःक्रियात्मक रहे है। लेकिन इन अन्तःक्रियाओं का स्वरूप अब बदला है और कुछ शक्तियाँ तथा प्रक्रियाएँ ऐसी रही है जिन्होने वर्तमान मे अन्तःक्रियात्मकता के स्वरूपो को और भी अधिक बदल दिया है। आज के वैश्विक सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य की सबसे बडी समस्या एकीकरण तथा संस्कृति बहुलता या विविधीकरण के बीच तनावों की है। एकीकरण के इन पक्षों को अमेरिकीकरण तथा दूसरे नाम पदार्थीकरण से भी सम्बोधित किया गया है अप्पादुराई का मानना है कि सांस्कृतिक

प्रवाह के विभिन्न पक्षो को समझने के लिए पाँच परिदृश्य नृजातीय परिधि, तकनीकी परिधि, वित्त परिधि, जनसंचार परिधि विचार परिधि है। ये वे प्रवाह है जो नई विश्व व्यवस्था की संरचना की वाहक है पाँचो ही परिदृश्य विश्व मे सांस्कृतिक प्रवाह के वाहक भी है।

गिडिन्स(2008) ने वैश्वीकरण को समझने के लिए दो सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्यो की चर्चा की है। पहला परिप्रेक्ष्य अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो पर आधारित है । दूसरे परिप्रेक्ष्य का सम्बन्ध ***विश्व व्यवस्था सिद्धान्त*** से है पहला परिप्रेक्ष्य मार्शल (1973) और मैक्लूहान(1968) से जुडा हुआ है तथा दूसरे परिप्रेक्ष्य का सम्बन्ध **वॉलरस्टीन** के विश्व व्यवस्था सिध्दांत के साथ जुडा हुआ है वैश्वीकरण दुनिया भर के लोगों के सामाजिक सम्बन्धों का ताना बाना है अर्थात सामाजिक सम्बन्धों का विश्वव्यापी सघनीकरण तथा विश्व के विभिन्न क्षेत्रों के मध्य बढ़ती हुई पारस्परिकता है यह पारस्परिकता सामाजिक आर्थिक सम्बन्धों में निहित होती है जो दूर–दूर स्थित स्थानीयताओं को आपस में जोड़ देता है इस प्रकार समय व स्थान का कोई महत्व नही होता है। गिडिन्स ने वैश्विीकरण को आधुनिकता के प्रसार के साथ जोडा है आधुनिकता में वैश्वीकरण अपरिहार्य है। गिडिन्स ने आधुनिकता के सन्दर्भ मे चार पक्ष राष्ट्रराज्य व्यवस्था विश्व पूँजीवाद विश्व सेना, अन्तर्राष्ट्रीय श्रम विभाजन आदि सम्मलित है।

वॉलरस्टीन (1990) ने वैश्वीकरण के सैध्दान्तिक रूपरेखा के अन्तर्गत ***विश्व व्यवस्था सिद्धान्त*** प्रस्तुत किया वॉलरस्टीन की रचनाओं पर मार्क्सवादी दृष्टिकोण की छाप स्पष्ट दिखाई देती हे। विश्व पूँजीवाद के सम्बन्ध मे मार्क्सवादी सिद्धान्त को समझाने के लिए विस्तार के सम्बन्ध में वॉलरस्टीन यूरोपीय प्रभुत्व के पूँजीवाद से निर्मित विश्व पूँजीवादी व्यवस्था के विकास पर वॉलरस्टीन का अपना चिंतन था। वॉलरस्टीन अपने सिद्धान्त की प्रक्रिया को तीन आधारो पर देखने का प्रयत्न किया मूल (Core), बाह्य (Periphem), अर्ध्दबाह्य (Semi Peripheral)।

स्मैल्सर (2003) वैश्वीकरण की सैद्धान्तिक रूप से मान्यता है प्रथम –वर्तमान तथा पहले से सोचे हुए विकासो की प्रक्रिया (आर्थिक तकनीकी, जनसंख्यात्मक, राजनीतिक, समाजिक, सांस्कृतिक) इस दुनिया मे एक अन्तर्राष्ट्रीय अथवा वैश्विक समाज विकसित हो रहे है। द्वितीय यह नया समाज राष्ट्र राज्यो की कीमत पर उभर रहा है जो स्वयं अपने अस्तित्व को बनाये रखने के

लिए नियन्त्रण खो रहे है। लेकिन स्मैल्सर का विश्वास है कि इससे कई संभावनॉए उपजी है जिनमे विभिन्न सम्प्रदायो में संघर्ष, नए प्रकार के तनावपूर्ण समूह, नए परिवर्तन तथा एक वैश्विक धर्म सम्मिलित है।

बेक (1992) ने बताया वैश्वीकरण की दिशा में आधुनिकीरण जोखिम एक अन्तर्निहित प्रवृत्ति है। बेक ने इसको जोखिम समाज की संज्ञा दी और कहते है जैसे ज्ञान बढा है इसलिए जोखिम भी वास्तव मे यह तर्क दिया जा सकता है कि जिन समाजिक रिश्तो, सस्थाओं और ज्ञान के भीतर ज्ञान का उत्पादन होता है। उनमें शामिल जोखिमों को आंकलन किया जाता है। काफी संभावनाऐं खुलने के साथ साथ नई तकनीको का रोजगार जब लाभ की इच्छा के साथ संयुक्त हो जाता है और यह विश्वव्यापी तक पहुचता है तो यह विशेष जोखिम (पर्यावरण प्रदूषण, बीमारी,) को लाता है। बेक ने तर्क दिया है कि तकनीकी आर्थिक प्रगति से सत्ता मे लाभ जल्दी से जोखिम के उत्पादन पर हावी हो रहा है इस अर्थ मे जोखिम को तकनीकी और आर्थिक बदलाव से होने वाले नुकसान की संभावना के रूप मे देखा जा रहा है ।

उत्तरआधुनिकता सिद्धान्त के अन्तर्गत वैश्वीकरण के कुछ अन्य वैचारिक दृष्टिकोण पहचान, मानदंडो और ज्ञान के निर्माण मे संरचनात्मक शक्ति के महत्व को उजागर करते है। वे सभी उत्तर आधुनिकतावाद के लेबल के तहत समूहीकृत है मिशेल फोकाल्ट ज्ञान शक्ति के सन्दर्भ मे समाज को समझने का प्रयास करता है शक्ति संरचनाओं ज्ञान आकार। कुछ ज्ञान संरचनाएँ कुछ शक्ति पदानुक्रमो का समर्थन करती है समझने की शासन संरचना यह निर्धारित करती है कि किसी दिए गए समाजिक–ऐतिहासिक सन्दर्भ मे क्या जाना जा सकता है और क्या नहीं। आधुनिक समाज मे ज्ञान की यह प्रमुख संरचना तर्कवाद है यह अनुभवजन्य दुनिया मानव नियन्त्रण प्रकृतिवादी विज्ञान और साधनवादी दक्षता के लिए प्रकृति की अधीनता पर जोर देता है। आधुनिक बुद्धिवाद आर्थिक विकास, तकनीकी नियन्त्रण, नौकरशाही संगठन और इच्छाओं को अनुशसित करने के साथ एक समाज का निर्माण करता है।

नारीवाद सिद्धान्त के अन्तर्गत यह मर्दानगी और स्त्रीत्व के समाजिक निर्माण पर जोर देता है ं। अन्य सभी सिद्धान्तों ने प्रोधौगिकी, राज्य पूँजी, पहचान और इसी तरह ट्रांस ग्रहीय और

सुपर क्षेत्रीय कनेक्टिविटी के उदय के पीछे की गतिशीलता की पहचान की है। जैविक सेक्स को समग्र समाजिक व्यवस्था को ढालने और वर्तमान मे वैश्विकता को इतिहास के रूप में आकार देने के लिए आयोजित किया जाता है उनकी मुख्य चिंता महिलाओं की स्थिति की पीछे हैं विशेष रूप से पुरूषों के लिए उनकी संरचनात्मक अधीनता। वैश्विक संचार मे महिलाओं को हाशिए पर रखा गया चुप कराया गया और उनका उल्लंघन किया गया।

ट्रांसफॉर्मेशनलिज्म सिद्धान्त के अन्तर्गत इस सिद्धान्त को **डविड हेल्ड** और उनके सहयोगियों द्वारा बताया गया कि वैश्वीकरण शब्द दुनिया भर मे राजनीतिक, आर्थिक और सास्ंकृतिक मामलों मे एक साझा स्थान बनाने मे वृद्धि को दर्शाता है इस अन्तःसम्बन्ध को देखते हुए वैश्वीकरण एक प्रक्रियाओं का समूह है जो सामाजिक सम्बन्धों और लेनदेन के स्थानिक संगठन मे परिवर्तन का प्रतीक है जिसे अन्तर प्रवाह और गतिविधि, सहभागिता और शक्ति के नेटर्वक मे व्यक्त किया गया है।

मार्क्स (1848) ने वैश्वीकरण का पहला नक्शा खींचा। मार्क्स ने 19वीं शताब्दी के अन्त और 20वीं सदी के प्रारम्भ में उपनिवेशवादी देशों की वैश्विक उपस्थिति और उनके शोषक स्वरूप के ऐतिहासिक सन्दर्भों को ध्यान में रखकर ही पूँजीवाद की भूमण्डलीय भूमिका को उजागर किया है जिसमें भूमण्डलीय पूँजी केवल आर्थिक उत्पाद तक केन्द्रित नहीं रहती बल्कि वह बौद्धिक उत्पाद (समाज संस्कृति) तक सभी क्षेत्रों के अपने दायरे में खींच लेती है। मार्क्स ने विश्व बाजारवाद की इस प्रवृत्ति को बहुत पहले ही पहचान लिया था उन्होंने वैश्वीकरण के ऐतिहासिक सन्दर्भो की पहचान करते हुए विश्व पूँजीवाद के सन्दर्भ में वैश्वीकरण के स्वरूप और उसकी विस्तारवादी प्रवृति पर प्रकाश डालते हुए कहा था कि "अपने माल के लिए लगातार बढ़ते बाजार की जरूरत बुर्जुआ वर्ग को ग्लोब भर में दौडती है वह प्रत्येक जगह अड्डा जमाता है हर जगह पहुँचता है और हर कहीं अपने सम्बन्ध बनाता है विश्व बाजार के शोषण के जरिए उत्पादन और उपभोक्ता को भूमण्डलीय रूप दे चुका है। राष्ट्र की विश्वस्तरीय अन्तःनिर्भरता देखते है जिस प्रकार यह संवाद भौतिक वस्तुओं में होता है उसी प्रकार बैद्धिक उत्पाद में भी होता है अलग–अलग राष्ट्रों के बौद्धिक उत्पाद सबकी आम सम्पत्ति बन जाते है।"

वाटर्स (2000) ने ***वहुपक्षीय सिद्धान्त*** के अन्तर्गत वैश्वीकरण की अवधारणा को प्रस्तुत किया और कहा वैश्वीकरण एक सामाजिक प्रकिया है जिसमें सामाजिक तथा सांस्कृतिक व्यवस्था जो भौगोलिक दवाब होते है पीछे हट जाते है और लोग भी इस तथ्य से अवगत हो जाते है कि अब भूगोल की सीमाएँ बेमतलब है वाटर्स वैश्वीकरण की सामाजिक प्रक्रिया के सामाजिक पद को इतना विशाल मानते है वे इसके अन्तर्गत राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक लक्षण भी सम्मिलित करते है।

कैसेल्स (1996,1998) ने वैश्वीकरण के लिए तकनीकी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जबकि कैसेल्स विश्व प्रणाली और वैश्विक पूँजीवाद के साथ सिद्धान्त का विश्लेषण करते है। वैश्वीकरण की अनिवार्य प्रकृति पूँजीवादी है। समाजशास्त्रीय तथा आर्थिक दृष्टि से वैश्वीकरण में कोई वैश्वीय पूँजीवादी वर्ग नहीं है। आज दुनिया में एक एकीकृत पूँजीवादी संरचना है। यह संरचना ही अर्थव्यवस्था को बनाती है और इससे समाज प्रभावित होता है। कैसेल्स का तर्क है कि जिसे हम पूँजीवादी संरचना कहते है उसका आधार सूचना तकनीकी तन्त्र है। कैसेल्स तकनीकी धारणा के साथ सूचना समाज तथा नेटवर्क समाज को जोड़ते है सूचना समाज के अन्तर्गत ज्ञान आधारित होता है तथा नेटवर्क समाज में तर्कसंगत तथा तार्किक प्रतिमान सम्मिलत है।

विश्व गाँव वैश्वीकरण की अवधारणा है इस अवधारणा के प्रणेता कनाडा के लेखक मार्शल मेक्लूहान (1964) है उनका प्रबन्ध है कि इलेक्ट्रॉनिक संचार ने सम्पूर्ण संसार को एक सूत्र में बाँध दिया है। इस तरह दुनिया भर के लोग टेलीविजन द्वारा प्रसारित खबरों और घटनाओं को साथ–साथ देखते है मेक्लूहान का कहना है कि मीडिया ने सम्पूर्ण दुनिया को एक छोटा सा गाँव बना दिया है।

सिंह (2000) भूमण्डलीकरण की अवधारणा में **एकीकृत उपागम** (मार्क्सवादी, संरचनावादी, प्रकार्यवादी, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य) दृष्टिकोण मानते हुए कहते है कि भूमण्डलीकरण के कारण समाज, संस्कृति, आर्थिक संस्था, राजनीतिक संरचना, जाति व्यवस्था के प्रकार्य में परिवर्तन आया है। सूचना समाज के उदय के कारण तथा अल्पसंख्यक तथा कमजोर वर्ग के लोगों मे एक नवीन क्रान्तिकारी चेतना उभरी है। राष्ट्र निर्माण की विचारधारा मे सशक्तिकरण हुआ है। सिंह ने

भूमण्डलीकरण के कारण भारतीय समाज में होने वाले परिवर्तन को दो भागों मे विभाजित किया है प्रथम संस्था मे परिवर्तन द्वितीय विचारधारा मे परिवर्तन है। सिंह का मानना है भूमण्डलीकरण के कारण प्रत्येक जाति, जनजाति, क्षेत्रीय समूह तथा अल्पसंख्यकों मे अपनी पहचान को बनाए रखने के लिए नवीन चेतना जगी है ये सारी चेतना हमारी भारतीय सामाजिक एकता को तोड़ती नहीं है बल्कि यह सामुदायिक चेतना और राष्ट्रीय चेतना को जगाती है। सिंह ने भूमण्डलीकरण को भारतीयकरण के साथ सम्बन्ध जोड़कर भारतीय संस्कृति को क्षेत्रीय, स्थानीय राष्ट्रीय स्तरों पर समझने का प्रयास किया।

(ब) सामाजिक–आर्थिक विकास

सामाजिक विकास एवं आर्थिक विकास अर्न्तसम्बन्धित अवधारणाऐं है परन्तु समरूपी अवधारणाऐं नहीं है। आर्थिक विकास एक प्रकार के तथ्यों की ओर और सामाजिक विकास दूसरे प्रकार के तथ्यों की ओर संकेत करता है। आर्थिक विकास का एक सामाजिक और सामाजिक विकास का एक आर्थिक पहलू होता है इससे इन दोनो ही प्रत्ययों के घनिष्ठ सम्बन्ध पर प्रकाश पड़ता है। आर्थिक विकास अर्थव्यवस्था में होने वाले गुणात्मक परिवर्तन तथा परिमाणात्मक वृद्धि दोनो ही की ओर संकेत करता है तथा दोनो को सम्मिलित करता है।

सामाजिक विकास पर सबसे महत्वपूर्ण विचार **एल.टी. हॉबहाऊस** ने ***सावयवी उपागम*** को अपनाया है तथा ***उद्विकासवादी तथा प्रत्यक्षवादी सावयवी दृष्टिकोण*** के अन्तर्गत हॉबहाउस (Social Development 1940) ने सामाजिक विकास का अर्थ मानव मस्तिष्क के विकास से लगाया है जिससे मनुष्य का मानसिक विकास होता है और अन्ततः सामाजिक विकास होता है। हॉबहाऊस ने सामाजिक विकास की अवधारणा में चार मापदण्ड प्रस्तुत किये– आकार में वृद्धि, दक्षता में वृद्धि, पारस्परिकता में वृद्धि, स्वाधीनता में वृद्धि आदि।

दुबे (1996) संरचनात्मक प्रकार्यवाद, परिप्रेक्ष्य के दृष्टिकोण से प्रस्तुत करते है कि सामाजिक विकास मानवीय आवश्यकताओं की सन्तुष्टि तथा जीवन की गुणवत्ता के सुधार के प्रश्नों पर केन्द्रित है। आर्थिक विकास के बदले सामाजिक विकास का सम्प्रत्यय अधिक व्यापक है और आर्थिक विकास को भी अपने में समेटे हुये है।

श्रीनिवास (1963) ने सामाजिक विकास की अवधारणा को परिभाषित करते हुये कहा है कि मूलतः निम्न कही जाने वाली जातियों द्वारा आत्मसम्मान, चेतना तथा सशक्तीकरण का विचार ग्रहण कर क्रमशः उच्चस्तरीय सोपान के रूप में समझा जा सकता है।

सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य

विकास का *मार्क्सवादी सिद्धान्त* (1859) के अन्तर्गत उत्पादन विधि में विकास या परिवर्तन के प्रभाव से उत्पन्न सामाजिक–राजनैतिक सांस्कृतिक संरचनाओं में समतामूलक परिवर्तन विकास का सूचक है। मार्क्स की परिभाषा में विकास की प्रक्रिया, विकास के प्रधान कारक और सम्पूर्ण समाज में संरचनात्मक परिवर्तन का उल्लेख किया गया है। प्रत्येक समाज की आर्थिक संरचना ही मूल संरचना होती है। उसी पर समाज की सभी व्यवस्थाऐं–समाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक निर्मित होती है इन व्यवस्थाओं के बीच गहरा अन्तर्सम्बन्ध होता है। इनके अन्तर्सम्बन्ध में निरंतर आन्तरिक और बाहरी कारकों के योग से विकास होता है।

विकास का *प्रसारवादी या सम्प्रेषण सिद्धान्त* डेनियल लर्नर द्वारा प्रस्तुत किया गया। प्रसार प्रक्रिया व्यक्ति, समूह, विचार, तकनीक का फैलाव, सांस्कृतिक सम्पर्क, आवागमन की बढ़ती सुविधा द्वारा सम्पन्न होती है। इस सिद्धान्त की झलक नवमार्क्सवादी विचारकों में भी पाते है। नवमार्क्सवादी विचारधारा कि अनुसार साम्राज्यवादी देशों की पूँजीवादी व्यवस्था अविकसित औपनिवेशिक देशों के सामाजिक विकास का एक स्रोत साबित हुई है।

पारसन्स ने विकास का *प्रकार्यवादी सिद्धान्त* के अन्तर्गत विकास के संदर्भ में व्यक्ति की सोच, ज्ञान और मानसिकता में इन गुणों के विकास को अनिवार्य माना है–बुद्धि विवेक सम्मत दृष्टि, सार्वभौमिकता, प्रकार्या की विशिष्टता के आधार पर सम्बन्ध स्थापित करना है। सार्वभौमिकता के मूल्य से परिचालित व्यक्ति अपनी भूमिकाओं के चयन और कार्यान्वयन में अपने परिवार धर्म, जाति आदि का ख्याल न करके भूमिका चुनाव की तटस्थ कसौटियों के आधार पर ही निर्णय करता है वस्तुतः बुद्धि विवेक दृष्टि के मामले में कोई संशोधन सम्भव नहीं है। जहाँ तक विकास और खास तौर पर आर्थिक विकास का सवाल है।

देसाई (1984) ने विकास की अवधारणा को ***मार्क्सवादी परिप्रेक्ष्य*** के अन्तर्गत प्रस्तुत किया। आर्थिक विकास के लिए सामुदायिक विकास योजना का परीक्षण (1959) भी मार्क्सवादी विश्लेषण (एतिहासिक उपागम) पर आधारित है विकास का मार्क्सवादी दृष्टिकोण भारत में सामाजिक विकास पूँजीवादी मार्ग के फलस्वरूप मानता है जिसे 1947 ई0 के बाद भारत में उभरने वाले बुर्जुआ ने अपनाया है इसके पीछे यहाँ के विशिष्ट, बहुजातीय, बहुधर्मीय, बहुभाषीय परिवेश का सन्दर्भ रहा है विकास का मार्क्सवादी दृष्टिकोण यह समझने में भी सहायता करता है कि ब्रिटिश सरकार ने रेलवे, सेवाओं, केन्द्रीकृत वर्दी कानून अंग्रेजी शिक्षा, आधुनिक उद्योग भारतीय समाज में गुणात्मक परिवर्तन लाता है जो विकास आधार है।

विकास के *आर्दश प्रारूप उपागम* के अन्तर्गत वेवर के अनुसार के किसी भी विषय के अध्ययन के लिए सबसे पहले उस विषय की अधिकतम विशेषताओं की सूची तैयार की जाती है। वेवर ने दो प्रारूपों का उल्लेख किया है पहला विकास के ऐतिहासिक क्रम में बुर्जुआ पूँजीवादी व्यवस्था का उदय हुआ जिसे वेवर ने विशेष प्रकार के वुद्धि विवेक सम्मत मूल्यों पर आधारित बताया जो पिछली पारम्परिक व्यवस्था से बिल्कुल भिन्न और अनोखी व्यवस्था थी। दूसरा आर्दश प्रारूप ऐतिहासिक उद्विकास के विभिन्न चरणों का विवरण और प्रसंग में पूँजीवादी विकास के नियम का प्रतिपादन करना है।

समीर अमीनः *असमान विकास का सिद्धान्त* के अन्तर्गत विश्व व्यवस्था को दो क्षेत्रों में बांटते है प्रथम आत्मकेन्द्रित व्यवस्था वाले देश, द्वितीय परिधीय व्यवस्था वाले देश है। आत्मकेन्द्रित देशों की अपनी स्वयं की गत्यात्मक व्यवस्था है जो बाह्य सम्बन्धों से प्रभावित नहीं होती है जबकि वे देश जो परिधि पर है केन्द्र के देशों की आवश्यकताओं को पूरा करते है।

निर्भरतावादी फ्रैन्क का *केन्द्र छोर सिद्धान्त* के अन्तर्गत फ्रैन्क ने उद्विकास तथा आधुनिकीकरण की प्रक्रियाओं को एक साथ जोडकर देखा। फ्रैन्क का मत है विश्व पूँजीवादी व्यवस्था का सम्बन्ध विकास तथा अल्पविकास दोनो से है ये दोनो ही अवधारणाऐं एक व्यवस्था के दो अलग–अलग पहलू है।

वॉलरस्टीन का *विश्व व्यवस्था सिद्धान्त* की प्रकृति मुख्य रूप से पूँजीवादी है। पूँजीवादी विश्व व्यवस्था अन्तर्राष्ट्रीय श्रम विभाजन पर आधारित है। यह श्रम विभाजन विभिन्न क्षेत्रों के बीच सम्बन्धों की प्रकृति का निर्धारण करता है। साथ ही साथ यह प्रत्येक क्षेत्र की श्रम दशाओं के प्रकारों का भी निर्धारण करता है। वॉलरस्टीन विश्व को क्षेत्रों के आधार पर चार श्रेणियों–केन्द्र, परिधि, अर्द्धपरिधि तथा बाह्य क्षेत्र आदि में बांटते है।

समाजिक विकास के आयाम के अन्तर्गत बिजली, शुद्ध पानी, परिवहन एवं संचार आदि बुनियादी सुविधाएँ सबके लिए सुलभ होना, समाज के पिछड़े व शोषित वर्गो, किसानों, महिलाओ, बच्चों, वृद्धो व विकलागों के विकास के लिए आवश्यक सुविधायें उपलब्ध होना, आम जनता रोटी कपड़ा मकान जैसी मौलिक आवश्यकताओं समूचित पूर्ति होना, विभिन्न आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक विषमताओं को दूर करना, ताकि समाज में समता लाते हुए सामाजिक बदलाव सम्भव हो सके। शिक्षा का समुचित विस्तार जिसके अन्तर्गत वैज्ञानिक शिक्षा पेशेवर व नैतिक शिक्षा का समावेश हो, समाज मे सृजनात्मक क्षमता का विकास, शोध, आविष्कार आदि सम्भव हो सके। राष्ट्र के स्वाभिमान अस्मिता व राष्ट्रीय पहचान को बनाए रखना, शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के उत्तम स्तर को बनाए रखने के लिए आवश्यक पोषण आहार, प्रदूषण रहित वातावरण, चिकित्सा आदि की पर्याप्त सुविधायें, विदेशी निर्भरता कम करके राष्ट्र को आत्म निर्भर बनने के सचेत प्रयत्न करना आदि सम्मिलित है।

सामाजिक विकास के लक्ष्य के अंतर्गत आम आदमी के जीवन स्तर में सुधार (भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि) अर्थात जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि, संसाधन लाभ एवं आय का समान वितरण अर्थात सामाजिक न्याय सुनिश्चित करना तथा मानव संसाधनो का विकास होना चाहिए। इसके अतिरिक्त शक्ति के केन्द्रीकरण के स्थान पर शक्ति के विकेन्द्रीकरण पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

संधारणीय (सतत्) विकास लक्ष्य– संयुक्त राष्ट्र महासभा में अगले 15 वर्षो अर्थात् 2030 तक के लिए एक नया एजेण्डा सतत् विकास लक्ष्यो को तय जिनमें विश्व की बेहतरी के लिए 17 सतत विकास लक्ष्यो को सम्मिलित किया गया। ये विकास लक्ष्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा,

असमानता में कमी, लैंगिक समानता, बेहतर स्वास्थ्य, गरीबी उन्मूलन, सस्ती स्वच्छ ऊर्जा, भूख की समाप्ति, शुद्ध पेयजल की उपलब्धता एवं स्वच्छता, उचित रोजगार एवं आर्थिक विकास, टिकाऊ शहर और समाज, जलवायु परिवर्तन का सामना के लिए त्वरित उपाय, शन्तिपूर्ण एवं समावेशी समाजो का निर्माण, महासागरों और समुद्री स्त्रोतो का संरक्षण, धरती एवं जंगलो आदि का संरक्षण, नई खोंजे, पद्धतियाँ एवं बुनियादी ढाँचा, सतत् विकास के लिए वैश्विक भागीदारी को बढ़ाना आदि।

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) द्वारा प्रकाशित **मानव विकास सूचकांक (HDI) (1990)** के अन्तर्गत तीन सूचकांक जीवन प्रत्याशा, शिक्षा, प्रति व्यक्ति आय को सम्मिलित किया गया है।

दुबे (1996) के अनुसार सामाजिक विकास सूचक के अन्तर्गत शुद्ध जल की आपूर्ति, स्वास्थ्य सुविधाएँ सुरक्षा, रोजगार, चेतना विस्तार के लिए शिक्षा, अनुकूलनात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रभावशाली संचार, आदि को शामिल किया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त सामाजिक आर्थिक विकास के सूचक – इसके अन्तर्गत साक्षरता, रोजगार स्तर में वृद्धि, जीवन प्रत्याशा, स्वास्थ्य, शिशु मृत्यु दर, संचार साधनों का प्रयोग, डिजिटल तकनीकी प्रयोग में सहभागिता, शिक्षा का स्तर, प्रति व्यक्ति आय, प्रति व्यक्ति ऊर्जा खपत, सकल घरेलू उत्पाद में कृषि, उद्योग, सेवा क्षेत्र, परिवार नियोजन, पर्दा प्रथा, प्रजनन दर में सुधार, लैगिंक समानता, शुद्ध पेय जी की उपलब्धता एवं स्वच्छता, उचित रोजगार एवं आर्थिक विकास आदि को सम्मिलित किया जायेगा।

सम्बन्धित साहित्य का पुनर्वालोकन

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन शोध के लिए विशेष महत्व है क्योंकि सम्बन्धित साहित्य के द्वारा ही हम प्रस्तुत विषय के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी प्राप्त करते है दूसरी उपयोगिता इस दृष्टि से है कि अनुसंधानकर्ता किसी एक विषय का तुलनात्मक अध्ययन कर सकता है तथा यह सामान्यीकरण कर सकता है कि उसके द्वारा प्राप्त परिणाम कहाँ तक उचित है।

- **अहमद (1990)** ने अपनी पुस्तक '**Islamic Education'** में बताया कि शिक्षा को व्यक्तियों और समाज के भाग के रूप मे परिभाषित किया जा सकता है। व्यक्ति समाज मे कला मूल्यों, रीति रिवाजों, आदर्शों को पीढी दर पीढी इस ज्ञान के भण्डार को शिक्षा के माध्यम से हस्तान्तरित कर सकता है और इस पुस्तक मे यह भी बताया गया कि विभिन्न क्षेत्रों के युवा पीढ़ी को अपनी गतिविधियों को पूरा करने में मदद करनी चाहिए। शिक्षा युवा पीढ़ी जीवन सफलतापूर्वक प्रभावी ढंग से यह योजनाबद्ध संचरण को सक्षम बनाता है। शिक्षा के माध्यम से समय की छोटी अवधि के भीतर सीखने के फल हासिल करने तथा आत्मसात करने के लिए पीढ़ी तत्पर रहती है।
- **मोन्डल (1997)** ने अपनी पुस्तक **'एजुकेशनल स्टेटस ऑफ मुस्लिम प्रॉबलम्स'** मे पश्चिम बंगाल के मुस्लिम समुदाय के शैक्षिक स्तर के विश्लेषण दर्शाने के उद्देश्य से गहन अनुभवजन्य पर आधारित है। लेखक ने अपनी पुस्तक में बताया कि समाज में विकास और परिवर्तन मानव संसाधनो की उच्च गुणवत्ता पर निर्भर करता है इस प्रकार आधुनिक औपचारिक शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का सबसे शक्तिशाली साधन माना जाता है। निष्कर्ष स्वरूप लेखक ने बताया मुस्लिम आबादी का शैक्षिक स्तर विशेष रूप से वयस्क आबादी का अत्यन्त दयनीय बताया। मुस्लिम महिला की स्थिति भी निम्न बताई।
- **खान (2001)** ने एक शैक्षणिक सम्मेलन मे अखिल भारतीय मुस्लिम की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। तथा इसमें बताया गया कि सर सैयद द्वारा 1886 मे चलाये गये अलीगढ़ आन्दोलन ने मुस्लिम पुरूषों एवं महिलाओं के बीच शिक्षा में आधुनिकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा इस आन्दोलन ने महत्वाकांक्षाओं को बढ़ावा देने के लिए काम किया और भारत में मुस्लिम लीग व मुस्लिम को मजबूत करने मे मौलिक कारक साबित हुआ।
- **जामन (2001)** द्वारा प्रकाशित पुस्तक '**Problems of Minority Education'** में हैदराबाद क्षेत्र मे अल्पसंख्यक शिक्षा की मध्ययुगीन, ब्रिटिश काल से अल्पसंख्यक शिक्षा की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण किया तथा अल्पसंख्यकों में शिक्षा, पिछडापन सम्बन्धी समस्याओं के कारण तथा

रणनीतियों का सुझााव दिया अल्पसंख्यकों मे शैक्षिक पिछडापन विशेष रूप से मुस्लिम अल्पसंख्यक में बताया।

- **नायर (2007)** ने अपने शोध **''भारत मे मुस्लिम महिलाओं और लड़कियों की शिक्षा का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन'' (महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा)** में मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा के उन्नयन के लिए, वर्तमान साक्षरता के विश्लेषण तथा एकीकृत करने, भावी दिशाओं और रणनीतियों के खोज के उद्देश्य से विश्लेषणात्मक विधि तथा सामाजिक सर्वेक्षण द्वारा अध्ययन किया गया तथा निष्कर्ष स्वरूप पाया गया मुस्लिम लड़कियों तथा महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति मे सामाजिक सांस्कृतिक कारक मौजूदा नीतियों की पृष्ठभूमि के खिलाफ बाधा डालते है। तथा मुस्लिम लड़कियों तथा महिलाओं की शिक्षा के क्षेत्र में किये गये प्रयोगो से नवाचार में वृद्धि हुई है तथा गरीबी, पित्रसत्ता से लिंग, जाति, वर्ग मे निरन्तर असमानता है। इन कारर्णो से मुस्लिम महिला की शिक्षा की स्थिति निम्न है।
- **अशरफ और अहमद (2012)** ने अपने शोध पत्र **'ग्रामीण क्षेत्र में मुस्लिम महिला शिक्षा और सशक्तिकरण (अलीगढ़ केस स्टडी)** में अलीगढ़ क्षेत्र की मुस्लिम महिलाओं मे शिक्षित व अशिक्षित प्रशिक्षित के प्रतिशत के अध्ययन शिक्षित मुस्लिम महिला के बीच शिक्षा के स्तर का अध्ययन करने, आर्थिक गतिविधि में शामिल मुस्लिम महिलाओं के प्रतिशत आदि के जानने के उद्देश्य से सर्वेक्षण विधि द्वारा साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग कर रैण्डम सैम्पल के माध्यम से 12 ब्लॉक से 12 गाँवों तथा प्रत्येक गाँव से 360 घरों का चयन किया तथा निष्कर्षस्वरूप पाया कि शिक्षित मुस्लिम महिलाएँ कम है अधिकतर मुस्लिम महिलाएँ गृहिणी है तथा अपने खेतों मे एक कृषि मजदूर के रूप मे मुस्लिम महिला कार्य करती है। ग्रामीण महिलाओं की शिक्षा मानती है माहिलाओं के लिए शिक्षा व्यक्तित्व के विकास का यह एक साधन है तथा शिक्षा ही सामाजिक रूप से उपयोगी कौशल, आदतों दृष्टिकोण को मजबूत करती है।
- **इस्लाम, रहमान, खातून, पाठक, इमाम (2014)** ने अपने शोध पत्र **'मुस्लिम महिलाओं के शिक्षा के सन्दर्भ मे वैवाहिक स्थिति, परिवार नियोजन, राजनीतिक भागीदारी,**

रोजगार तथा मीडिया तक पहुँच का तुलनात्मक अध्ययन– आजमगढ़ जिले का वैयक्तिक अध्ययन' में उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले में मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा वैवाहिक स्थिति, परिवार नियोजन और राजनीतिक भागीदारी की स्थिति तथा मीडिया पहुँच के बीच सम्बन्धों का पता लगाने के उददेश्य से तैयार किया गया। इस शोध मे गुणात्मक, मात्रात्मक दोनों विधियों द्वारा रैण्डम सैम्पल का प्रयोग किया गया। सैम्पलिंग मे 365 उत्तरदाता शामिल है। प्रस्तुत शोध मे गहन साक्षात्कार का भी प्रयोग किया गया था तथा निष्कर्ष स्वरूप पाया कि आजमगढ़ जिले मे मुस्लिम महिलाओं की वैवाहिक स्थिति तथा मीडिया पहुँच पर शिक्षा का सकारात्मक प्रभाव पडा तथा पारिवारिक योजना व राजनीतिक भागीदारी पर शिक्षा का कोई प्रभाव नहीं मिला।

- **जयसवाल (2014)** ने अपने शोध पत्र **'भारतीय ग्रामीण महिलाओं पर वैश्वीकरण का प्रभाव'** मे ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं पर वैश्वीकरण के सकारात्मक तथा नकरात्मक प्रभाव जानने के उद्देश्य से पूरी तरह सेकेण्डरी डेटा प्रयोग किया गया है निष्कर्ष रूप मे पाया गया कि वैश्वीकरण ने विकासशील देशों में महिलाओं की सुरक्षा तथा गरिमा प्रदान करने की क्षमता को कम किया है यद्यपि श्रम बल मे महिलाओं की भूमिका पारम्परिक कृषि और घरेलू भूमिका से असेम्बली उत्पादन मे बदल गई है। वैश्वीकरण ने कार्यस्थल मे महिलाओं के अवसरों को बढ़ाने मे एक निश्चित भूमिका निभाता है तथा यह कार्यस्थलों मे महिलाओं के अवसरों का विस्तार करता है। नए आर्थिक नीति सुधारों मे विशेष रूप से ग्रामीण महिलाओं पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा वैश्वीकृत अर्थव्यवस्थाओं में असुरक्षित काम करने की स्थितियाँ पारिवारिक टूटने का कारण बन गया है।
- **तलुकदार (2015)** ने अपने शोध **'पश्चिम बंगाल' में मुस्लिम महिलाओ की शिक्षा और सशक्तीकरण'** में मुस्लिम महिलाओ की सामाजिक सांस्कृतिक, आर्थिक शैक्षणिक स्थिति जानने उद्देश्य से वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि से साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया। यह अध्ययन मुख्य रूप से प्राथमिक तथा आंशिक रूप से माध्यमिक स्त्रोतो पर आधारित है। इसमें पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद और नाडिया जिलों से यादृच्छिक रूप से चुने गए सैम्पल

में आयोजित किया गया है निष्कर्ष स्वरूप पाते हैं मुस्लिम महिलायें परिवार कल्याण के बारे मे जागरूक है लेकिन फिर भी आर्थिक रूप से पति पर निर्भर है। इसका कारण महिलाओ के लिए पाम्परिक मान्यताओं और रूढ़िवादी लोगो के साथ सम्बन्ध तथा गरीबी है। घरेलू मामलों में निर्णय लेने की शक्ति बढ़ रही है। लेकिन यह दोनों जिलों में समान नहीं है।

- **चक्रबर्ती (2015)** ने अपनी पुस्तक **'Young Muslim Women In India Bollywood Identity And Changing Youth Culture'** मे पश्चिम बंगाल कोलकाता में झोपड़ियों की युवा मुस्लिम महिलाओं पर वैश्वीकरण के प्रभाव के जानने के उद्देश्य से सहभागी अवलोकन द्वारा तैयार की। चक्रबर्ती कहते है कि यह आम धारणा है कि झुग्गी युवा गरीब पीड़ित होते है जिन्हें भारत के सामाजिक परिवर्तन से बाहर रखा गया है और अल्पसंख्यक मुस्लिम समुदायों के लिए प्रवचन और भी चुनौतीपूर्ण बताए वास्तविकता निष्कर्ष स्वरूप में बताते है कि झोपड़ियो में रहने वाली युवा मुस्लिम लड़कियॉ महिलाओं में अविश्वसनीय महत्वाकाक्षांए इच्छायें और अपराध बताए जो देश के समाजशास्त्रीय परिवर्तनों को प्रभावित करते है अपनी पुस्तक के माध्यम से चक्रबर्ती कई युवा लड़कियों के घनिष्ठ जीवन में एक झलक प्रदान करता है जो खतरनाक इच्छाओं को पूरा करने और कई पहचान करने के लिए उत्सुक है झुग्गी की मुस्लिम युवा लड़कियाँ सैक्सी बॉलीवुड नृत्य सीखती है और रोमांटिक रिश्ते विकसित करती है और वैश्वीकरण भारत के विभिन्न पहलुओं में भाग लेने के लिए समय व स्थान जीतती है जो उन्हें अक्सर बाहर करने की कोशिश करता है। लेखक ने कोलकाता में रहने वाली झुग्गी झोपड़ियो की युवा मुस्लिम लड़कियों व महिलाओ को भारत की वैश्वीकरण की प्रक्रिया में सबसे आगे बताया।
- **रजाक एवं पिसाल (2016)** ने अपने शोध पत्र **'मुस्लिम महिलाओं के सामाजिक उद्यमों का विकास डिजिटल इकोनोमी की ओर'** में मुस्लिम महिलाहओ में डिजिटल साक्षरता, ऑनलाइन पेमेन्ट तथा टेक्नोलाजी ट्रान्सफर करने जॉच करने के उद्देश्य से है। इस शोध पेपर में डाटा संग्रह साक्षात्कार व माध्यमिक स्त्रोत द्वारा किया गया है। निष्कर्ष स्वरूप पता चलता कि मुस्लिम महिलाओं के लिए ऑनलाइन अपने उत्पादों को बेचने की यात्रा अभी

बहुत दूर है। मुस्लिम महिलायें अभी शुरूआती चरण में है। मुस्लिम महिलाओं में डिजिटल साक्षरता अभी कम है मुस्लिम महिलाओ में डिजिटल साक्षरता बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण व जागरूकता की आवश्यकता है।

- **बानो (2017)** ने अपने शोध पत्र **'भारत में मुस्लिम महिलाओं की शैक्षणिक स्थितिः एक अवलोकन'** मे मुस्लिम महिलाओं और भविष्य मे शिक्षा की स्थिति के एक संक्षिप्त अवलोकन देने, जीवन के सभी क्षेत्रों मे मुस्लिम महिलाओं को एकीकृत करने तथा उन्हे दिशा निर्देश देने के उद्देश्य से अध्ययन किया है निष्कर्ष स्वरूप पाया गया कि मुस्लिम को सामाजिक समावेश को आरक्षण की नीति के माध्यम से प्रयास किया गया है जो अल्पसंख्यकों को ऊपर उठाने मे विफल रहा है।

- **सबा, चैल, अहमद (2017)** ने अपने शोध पत्र **'पश्चिम बंगाल में सशक्त मुस्लिम महिला के लिए शिक्षा एक शक्तिशाली हथियार'** में पश्चिम बंगाल के समाज में मुस्लिम महिलाओं की स्थिति का विश्लेषण करने, सामाजिक सांस्कृतिक स्थिति का पता लगाने, मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा पर धार्मिक भूमिका का पता लगाने तथा सशक्तिकरण जानने के उद्देश्य से वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि के माध्यम से किया गया। इसमें पश्चिम बंगाल के 23 जिलों को शामिल किया गया तथा 500 से अधिक मुस्लिम महिलाओं सम्मिलित किया है तथा निष्कर्ष यह है कि अधिकतर मुस्लिम महिलाएं अपने अधिकार से अनजान है इसके लिए गरीबी, निरक्षरता, रूढ़िवादी सोच आदि कारक जिम्मेदार है अध्ययन में बताया कि मुस्लिम महिलाओं को सशक्त बनाने में और इनके उत्थान में साक्षरता एक मात्र हथियार है।

- **गुप्ता, रूज (2018)** ने अपने शोध पत्र **'भारत मं मुस्लिम शिक्षा में लिंग असमानता को प्रभावित करने वाले कारक'** में इस अध्ययन का उददेश्य अनुभवी रूप से कुछ सामाजिक आर्थिक और जनसांरिव्यकीय चर के प्रभाव का मूल्यांकन करना है तथा राष्ट्रीय सैम्पल सर्वेक्षण के माध्यम से 5–17 वर्ष आयु वर्ग के व्यक्तियों के सैम्पल का उपयोग करके मुस्लिमों की वर्तमान शिक्षा उपस्थिति स्तर रोजगार बेरोजगारी सर्वेक्षण (2011–12) इसके अतिरिक्त यह शोध पेपर मुस्लिमों की शिक्षा में लिंग अन्तर पर इन कारकों के प्रभाव की जाँच करने के

प्रयास आदि उद्देश्य भी है निष्कर्ष स्वरूप पता चलता है कि मुस्लिम समुदाय के सदस्यों को किसी भी शैक्षणिक संस्थान में भाग लेने की संभावना कम होती है। यदि वे निम्न आय की स्थिति वाले घर से सम्बन्धित है। तो उपस्थिति होने की सम्भावना कम होता है। यदि वे ऊपरी आय स्थिति घर के है तो उपस्थिति होने की अधिक सम्भावना है। मुस्लिम लड़कियों की तुलना में यदि वे अमीर परिवारों की है तो मुस्लिम लडकों को स्कूल में जाने की संभावना अधिक है। इसके विपरीत गरीब मुस्लिम परिवारों में लडकियों, लड़को की तुलना में स्कूल जाने की अधिक संम्भावना रखते है। कई अन्य सामाजिक आर्थिक और जनसांख्यिकीय कारक भी मुस्लिम बच्चों की वर्तमान शिक्षा की भागीदारी को प्रभावित करते है।

शोध अन्तरालः

1. पूर्व साहित्य सर्वेक्षण के आधार पर यह ज्ञात होता है कि वैश्वीकरण के प्रभाव के शोध कृषि, ग्रामीण महिला, न्यायिक प्रक्रिया, महिला आदि पर अध्ययन किए जा चुके है लेकिन वैश्वीकरण तथा मुस्लिम महिलाओं का सामाजिक आर्थिक विकास का अध्ययन नहीं किया है।
2. मुस्लिम महिलाओं में वैश्वीकरण तथा सामाजिक आर्थिक विकास पर प्रभाव का अध्ययन नहीं हुआ हैं।
3. वैश्वीकरण का मुस्लिम महिलाओं के शिक्षा तथा व्यवसाय पर प्रभाव का अध्ययन नहीं हुआ हैं।
4. वैश्वीकरण का मुस्लिम महिलाओं के अपने अधिकारो के प्रति जागरूकता का का अध्ययन नहीं हुआ है।
5. वैश्वीकरण का मुस्लिम महिलाओं में डिजिटल तकनीकी प्रयोग पर प्रभाव का अध्ययन क्षेत्र के रूप में उपेक्षा की गई है।

उपर्युक्त शोध अन्तरालों को ध्यान में रखते हुए हमने प्रस्तुत विषय "**वैश्वीकरण एवं मुस्लिम महिलायेंः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (आगरा नगर के विशेष सन्दर्भ में)**" चुना है।

समस्या का अभिकथन

भारत एक विविधतापूर्ण वाला देश है जिसमें कुछ प्रमुख धर्मों का जन्म स्थल है ये धर्म हिन्दू, बौद्ध, जैन, सिख हैं और इसमें कुछ विदेशी धर्म इस्लाम, इसाई आदि धर्म का भी समावेश है। भारतीय संविधान देश को एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र घोषित करता है। भारत के संविधान (अनुच्छेद 25–28) ने धर्म की स्वतन्त्रता का अधिकार मौलिक अधिकार घोषित किया।

जनसंख्या की दृष्टि से भारत में मुस्लिम दूसरे सबसे बड़े धर्म (सेन्सस 2011– हिन्दू 79.8 प्रतिशत तथा मुस्लिम 14.23 प्रतिशत) तथा सबसे बड़ा अल्पसंख्यक (सेन्सस 2011– मुस्लिम 14.23 प्रतिशत, इसाई 2.3 प्रतिशत, सिख 1.7, बौद्ध 0.7, जैन 0.45 प्रतिशत) है। इसीलिए देश का विकास होने के लिए मुस्लिम समुदाय का विकास होना भी बहुत आवश्यक है, इसका विकास मुस्लिम महिलाओं के विकास से ही सम्भव है, क्योंकि भावी पीढ़ी का सामाजिक आर्थिक विकास इन्हीं से सम्भव है। लेकिन सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण अध्ययन करने के पश्चात मुस्लिम समुदाय तथा मुस्लिम महिला के शिक्षा का स्तर निम्न पाया गया (सेन्सस 2011 में 7 वर्ष ऊपर महिला का प्रतिशत 62.04 प्रतिशत तथा हिन्दू महिला 64.34 प्रतिशत तथा 20 वर्ष से ऊपर मुस्लिम महिला 3.91 प्रतिशत तथा हिन्दू महिला में 7.60 प्रतिशत), मुस्लिम महिला का स्वास्थ्य का स्तर निम्न पाया गया (सच्चर समिति प्रतिवेदन 2006) तथा मुस्लिम समुदाय की आबादी 33 प्रतिशत से कम कार्य भागीदारी दर है जो अखिल भारतीय औसत 40 प्रतिशत से कम है इस प्रकार मुस्लिम महिलाओं की औपचारिक कार्य भागीदारी दर अन्य धार्मिक समुदायों से कम है। (सेन्सस 2011–14.8 प्रतिशत), भारत में मुस्लिम शिक्षा में लिंग असमानता को प्रभावित करने वाले कारकों को देखा गया (गुप्ता, रूज 2018) तथा मुस्लिम महिलाओं में डिजिटल साक्षरता भी कम देखी गई। (रजाक एवं पिसाल 2016)। वर्तमान समय में मुस्लिम महिलाओं का सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक स्तर तुलनात्मक रूप से कम है। (सच्चर समिति प्रतिवेदन 2006, रंगनाथ मिश्रा कमीषन 2007, मानव विकास रिपोर्ट 2011, (Post Sachar Evaluation Committee Report or Kundu Committee 2014) मुस्लिम महिला का सामाजिक आर्थिक, शैक्षणिक स्तर हिन्दू महिलाओं की तुलना में क्यों कम है। मुस्लिम महिला के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक स्तर उच्च होने में

कौन सी बाधाएँ है जो मुस्लिम महिला के सामाजिक आर्थिक विकास में बाधक है? वे कौन से कारण है जो मुस्लिम महिला के सामाजिक आर्थिक विकास को ऊँचा स्तर नहीं होने दे रहे है? वे कौन से परम्परागत, भौगोलिक, एतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक कारक हैं जो मुस्लिम महिलाओं के पिछड़ेपन के लिये उत्तरदायी हैं?

वर्तमान समय में वैश्वीकरण का प्रभाव समाज के सभी स्तरों पर देखा जा रहा है वैश्वीकरण का प्रभाव मुस्लिम महिलाओं में भी दिखाई दे रहा है। (चक्रबर्ती 2015) तथा वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो रही है **(मुस्लिम वॉमेन – प्रोटेक्शन ऑफ राइट्स ऑन मैरिज एक्ट 2019)** वैश्वीकरण के प्रभाव के शोध सम्बन्धी कार्य तेलंगाना में कृषि पर (Soundarya 2018), ग्रामीण महिला पर (जयसवाल 2014), भारत में न्यायिक प्रक्रिया पर (Singh and Badyal 2018), ग्रामीण विकास पर (Tirkey 2017) आदि पर हो चुके है लेकिन आगरा क्षेत्र में मुस्लिम महिला पर वैश्वीकरण के प्रभाव का कोई अध्ययन नहीं हुआ उपरोक्त सभी विचारों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्री ने प्रस्तुत शोध "**वैश्वीकरण एवं मुस्लिम महिलायें: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (आगरा नगर के विशेष सन्दभ में)**" का चयन किया है।

प्रमुख शब्दों की परिभाषा

वैश्वीकरण

वैश्वीकरण एक सतत प्रक्रिया है जिसमें समाज के आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में परस्पर परिवर्तन शामिल है। एक प्रक्रिया के रूप में इसमें राष्ट्रों, क्षेत्रों, समुदायों और यहाँ तक कि अलग अलग स्थानों के बीच इन पहलुओं का लगातार बढ़ता एकीकरण शामिल है।

मुस्लिम महिला

भारतीय समाज विविधतायुक्त समाज है जिसमें बहुत से धर्म जाति, भाषा, क्षेत्र, रीतिरिवाज व परम्पराओं का मिश्रण है इस समाज में धर्म हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन आते है इन धर्म के अन्तर्गत आने वाली महिलाओं को धर्म के अनुसार परिभाषित किया जा सकता है। इस

प्रकार मुस्लिम महिलाएं वे महिला होती है जो इस्लाम धर्म को मानती है इस्लाम धर्म में दिये गये नियमों का अनुसरण करती है।

सामाजिक आर्थिक विकास

सामाजिक विकास सामाजिक परिवर्तन की एक विशिष्ट प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक देश के अधिकाधिक नागरिक उच्च भौतिक रहन–सहन का स्तर स्वास्थ्य का स्तर एवं दीर्घ जीवन प्राप्त करने के साथ–साथ अधिकाधिक मात्रा में शिक्षित होने का प्रयास करते है। सामाजिक विकास का सम्प्रत्यय अधिक व्यापक है जिसमे आर्थिक विकास भी शमिल है। दूसरे शब्दों में सामजिक जीवन में गुणात्मक सुधार तथा अधिकाधिक मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति को सामाजिक आर्थिक विकास कहते है।

अध्ययन का महत्व

मुस्लिम महिलाओं में स्वास्थ्य, शिक्षा का निम्न स्तर, गरीबी, पिछड़ापन, सामाजिक आर्थिक स्थिति निम्न, तथा जागरूकता की कमी भी देखी जा सकती है। ये सभी सामाजिक विकास के सूचक है जो मुस्लिम महिलाओं में समाजिक विकास अत्यन्त निम्न दर्शाता है। प्रस्तुत शोध **"वैश्वीकरण एवं मुस्लिम महिलायें: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (आगरा नगर के विशेष सन्दर्भ में)"** से मुस्लिम महिलाओं की ओर ध्यान आकर्षित हो उनके नये दृष्टिकोण को समझकर उनके सामाजिक विकास के लिए नई योजनाएँ बनाई जा सके जो इसके लिए लाभकारी हो जो इन्हें समाज की मुख्य धारा में ला सके। हो सकता है यह अध्ययन भविष्य में शोधकर्ता का ध्यान मुस्लिम महिलाओं के नये सामाजिक आर्थिक पहलुओं पर अध्ययन करने के प्रेरित कर सके जो मुस्लिम महिलाओं के सामाजिक आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है क्योंकि किसी भी क्षेत्र के विकास के लिये योजना शोध निष्कर्षो के आधार पर राष्ट्रीय या राज्य स्तर पर योजना बनायी जाती है शायद जो भविष्य में मुस्लिम महिलाओं की स्थिति में और सुधार हो सके।

उद्देश्य

1. मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. मुस्लिम महिलाओं में वैश्वीकरण तथा सामाजिक–आर्थिक विकास पर प्रभाव का अध्ययन करना।
3. वैश्वीकरण का मुस्लिम महिलाओं के शिक्षा तथा व्यवसाय पर प्रभाव का अध्ययन करना।
4. वैश्वीकरण का मुस्लिम महिलाओं में डिजिटल तकनीकी प्रयोग पर प्रभाव का अध्ययन करना।
5. "मुस्लिम वूमेन–प्रोटेक्शन ऑफ राइट्स ऑन मैरिज एक्ट 2019" के प्रति मुस्लिम महिलाओं की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

परिकल्पनाऐं

1. मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति अपेक्षाकृत निम्न है।
2. मुस्लिम महिलाओं में वैश्वीकरण तथा सामाजिक–आर्थिक विकास में कोई सम्बन्ध नहीं है।
3. वैश्वीकरण का मुस्लिम महिलाओं के शिक्षा तथा व्यवसाय पर कोई प्रभाव नहीं पड रहा है।
4. वैश्वीकरण का मुस्लिम महिलाओं मे डिजिटल तकनीकी प्रयोग पर प्रभाव तुलनात्मक रूप से निम्न है।
5. "मुस्लिम वूमेन–प्रोटेक्शन ऑफ राइट्स ऑन मैरिज एक्ट 2019" के प्रति मुस्लिम महिलाओं की अभिवृत्ति नकारात्मक है।

अध्ययन पद्धतिशास्त्र

1. **अध्ययन क्षेत्रः** प्रस्तुत शोध अध्ययन का क्षेत्र आगरा नगर होगा।
2. **शोध प्ररचनाः** प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक शोध प्ररचनाओं का प्रयोग किया जाएगा।
3. **अध्ययन का समग्रः** प्रस्तुत शोध अध्ययन का समग्र आगरा नगर में स्थायी रूप से निवास करने वाली समस्त मुस्लिम महिलाऐं होंगी।
4. **निदर्शन विधिः** प्रस्तुत शोध अध्ययन में बहुस्तरीय दैव निदर्शन प्रणाली का प्रयोग किया जाएगा। प्रथम स्तर में आगरा नगर के कलेक्ट्रेट कार्यालय में मुस्लिम जनसंख्या बाहुल्य

वाले पंजीकृत वार्ड (संख्या 11) की सूची तैयार की जाएगी। द्वितीय स्तर में इस सूची में 30 प्रतिशत पंजीकृत वार्ड (3.3=3) का चुनाव किया जाएगा। तृतीय स्तर में चयनित पंजीकृत वार्ड (संख्या 3) में से 10 प्रतिशत सैम्पल (379) चुना जाएगा। निदर्शन चयन की प्रणाली को निम्नांकित सारणी द्वारा प्रदर्शित किया गया है–

निदर्शन चयन प्रणाली

प्रथम स्तर में आगरा नगर के कलेक्ट्रेट कार्यालय से मुस्लिम जनसंख्या बाहुल्य वाल पंजीकृत वार्ड (संख्या 11) की सूची तैयार करना	क्रम सं0	वार्ड संख्या	वार्ड का नाम	वार्ड की कुल जनंसंख्या	मुस्लिम की प्रतिशत जनसंख्या	मुस्लिम महिलाओ की जनंसख्या	कुल मुस्लिम में महिला का प्रतिशत
	1	25	बागमुज्फ्फर खॉ	30968	5	751	48.51
	2	21	बारह खम्बा	26419	18	2258	47.48
	3	71	नगला पदी	17695	9.5	781	46.46
	4	60	ख्वासपुरा	14741	33	2237	45.99
	5	49	राहुल नगर	13098	14	843	45.99
	6	66	नवलगंज	11416	17	863	44.48
	7	13	नगला हरमुख	13443	7	418	44.4
	8	41	आजमपाड़ा	11580	25.48	1283	43.47
	9	53	मंटोला	11796	13	659	42.98
	10	27	अजीत नगर	16832	11	768	41.49
	11	33	धाधुपुरा	9236	7	264	40.86
द्वितीय स्तर में इस सूची में से 30 प्रतिशत पंजीकृत वार्ड (3) का चुनाव करना	1	25	बागमुजफ्फर खॉ	30968	5	751	48.51
	2	21	बाहर खम्बा	26419	18	2258	47.48
	3	71	नगला पदी	17695	9.5	781	46.46
तृतीय स्तर में चयनित पंजीकृत वार्ड (संख्या 3) में से 10 प्रतिशत सैम्पल का चुनाव करना	चयनित पंजीकृत वार्ड (संख्या 3) में से 10 प्रतिशत सैम्पल (379) चुना जाएगा।						

स्त्रोत– District and urban development agency list by collectorate office of Agra

2011 (list of election ward for Muslims)

अध्ययन की इकाई

अध्ययन की इकाई प्रत्येक परिवार की वरिष्ठतम मुस्लिम महिला होंगी।

तथ्य संकलन के स्त्रोत तथा अभियंत्र

प्रस्तुत शोध में तथ्य संकलन हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोतों का प्रयोग किया जाएगा। प्राथमिक स्त्रोत में **संरचित साक्षात्कार अनूसूची** का प्रयोग किया जाएगा। द्वितीयक स्त्रोत के अन्तर्गत विभिन्न पुस्तको, लेखों, शोध प्रपत्रों, शोध पत्रिकाओ तथा समाचार पत्रों, इन्टरनेट वेबसाइट्स, शासकीय प्रतिवेदन का प्रयोग किया जाएगा तथा मुस्लिम महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक विकास से सम्बन्धित स्केल निर्मित किया जाएगा।

प्रस्तावित अध्याय

प्रथम अध्याय

- प्रस्तावना
- अवधारणात्मक तथा सैद्धान्तिक रूपरेखा

(अ) वैश्वीकरण

(ब) सामाजिक आर्थिक विकास

- सम्बन्धित साहित्य का पुनर्वालोकन
- शोध अन्तराल
- समस्या का अभिकथन
- प्रमुख शब्दों की परिभाषा
- अध्ययन का महत्व
- उद्देश्य
- परिकल्पनाऐं
- अध्ययन पद्धतिशास्त्र

(i) अध्ययन क्षेत्र

(ii) शोध प्ररचना

(iii) अध्ययन का समग्र

(iv) निदर्शन विधि

(v) अध्ययन की इकाई

(vi) तथ्य संकलन के स्त्रोत तथा अभियंत्र

द्वितीय अध्याय

मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि

तृतीय अध्याय

वैश्वीकरण तथा मुस्लिम महिलाओं का सामाजिक आर्थिक विकास

चतुर्थ अध्याय

वैश्वीकरण तथा मुस्लिम महिलाओं में शिक्षा तथा व्यवसाय

पंचम अध्याय

वैश्वीकरण का मुस्लिम महिलाओं में डिजिटल तकनीकी का प्रयोग

षष्टम अध्याय

"मुस्लिम वूमेन–प्रोटेक्शन ऑफ राइट्स ऑन मैरिज एक्ट 2019" तथा मुस्लिम महिलायें

- **सुझाव एवं निष्कर्ष**
- **सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**
- **परिशिष्ट**

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- **पुस्तके एवं शोध पत्रिकाएँ**

- Ahmad, Manzoor. (1990), "***Islamic Education"***, New Delhi: Qazi Publishers and Distributors
- Giddens, Anthony. (1990), "***The consequences of modernity"***: Stanford University Press
- दुबे, श्यामाचरण. (1996), ''***विकास का समाजशास्त्र'',*** नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन
- Mondal, Rahim sekh. (1997), ***"Educational Status of Muslim: Problems Prospects and Priorities"*** Delhi: Inter Media Publication.
- Giddens, Anthony. (1999), "***The Runway world"***, London: Profile books limited
- Singh, Yogendra. (2000), "***Culture Change in India Identity and Globalization"***, Jaipur: Rawat Publications.
- Jaman, Mohammad Shafiuddin. (2001), "***Problems of Minorities Educational links"***, Hyderabad : corporation publication
- Khan, Abdul Rashid. (2001), "***All India Muslim Educational Conference (1886-1947)",*** Oxford University Press.
- कुमार, अमर. (2005), ''***योगेन्द्र सिंह का समाजशास्त्र''*** , जयपुर : रावत पब्लिकेशन्स,
- सच्चर कमेटी रिपोर्ट, (2006), ''***सोशल इकोनोमिक स्टेटस एण्ड एजूकेशनल आफ मुस्लिम कम्यूनिटी इन इण्डिया'',*** New Delhi, Government of India.
- नायर, ऊषा. (2007), "***An analytical Study of Educational of Muslim women and girls In India"***, New Delhi : Ministry of women and child Development .
- सिंह, शिवबहाल. (2010), ***''विकास का समाजशास्त्र''*** , जयपुरः रावत पब्लिकेशन
- **भारतीय जनगणना** (2011)

- Ashraf Saiyad wasim and Ahmad Iyes. (2012), "***Educational and Empowerment in Rural Muslim women, Aligarh case study,"*** International Journal of Scienctific and research Publication, Vol.2, Issue-4.
- Jaiswal, Ajit. (2014), "***Globlization impact on Rural women***" Arts and Social Science Journal
- भार्गव, नरेश. (2014), ***''वैश्वीकरण समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य'',*** जयपुरः रावत पब्लिकेशन
- Committee, P.S. (2014), **"Post Sachar Evaluation Committee"**, New Delhi, GOI
- Islam, Faujia Etal. (2014), Comparative Study of Muslim women's Education in the context of employment, Access to media, Marital Status, Family planning and Political Participation- Case Study of Azamgarh district", Journal of Humanities and Social Science Vol.- 19, Issue 3, pp..186-196
- Chakraborty, Kabita. (2015), "***Young Muslim Women in India: Bollywood Indentiy and changing youth culture",*** New York: Routledge Publication.
- Talukdar, Sarmila. (2015), ***"Education and Empowerment of Muslim Women In west Bengal"*** University of Kalyani, Faculty of education, Department of education, Kalyani Nadiya west Bengal.
- सुचिन्मयी, रचना. (2016), ''***समसायिक राजनीति मद्दे'',*** जयपुर : रावत पब्लिकेशन
- Rajak and Ahamad Pisal (2016) "***Development of Social Enterprises of Muslim Women towards Digital Economy"***, International Journal of Business Economics and Law Vol.-9, Issue 5. PP.
- पाण्डेय,एस.एस. (2016), "***समाजशास्त्र",*** New Delhi: McGraw Hill Education (India) Private Limited.
- एम0 एन0 श्रीमिवास एम0एस0 (2016), ***''आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन'',*** दिल्ली : राजकमल प्रकाशन
- नागला, बी.के. (2017) ***''भारतीय समाजशास्त्रीय चिंतन'',*** जयपुरः रावत पब्लिकेशन

- दोषी, शंभू लाल. (2017), *''आधुनिक समाजशास्त्रीय विचारक'',* जयपुरः रावत पब्लिकेशन
- Makelvi, lawanda and Chaterjee, Karishma. (2017), ***"Muslim women uses Internet media in process of promotion in USA",*** Qualitative Reserch Reports in Communication, Vol.-18, Issue-1. Page-18-26
- Saba, Etal. (2017), ***"Education is a powerful weapon for Empowering Muslim Women in West Bengal",*** International Journal of Advanced Educational Research, Vol.-2, Iseue 3.
- Bano, Firdaus. (2017), **"*Educational Status of Muslim women In India: A observation***" Journal of Humanities and Social Science, Vol.-22, Issue 6, P.P. 10-13.
- Tirkey, Albertina. (2017), "***Globalization's Impact on Rural Development***", Third Concept vol.31, No 364, P.P. 20-23
- Soundarya, N. (2018), "***Globalization's impact on Agriculture in Telangana***", Third concept, vol.82,No.373,P.P. 14-19
- Singh Rattan, Badyal Ravideep. (2018), "***Impact of Globalization on Judicial Process In India***" , International Research Journal of Socio-legal Studies. P.P. 8-18
- गुप्ता, रेशमी सेन, और रूज देबासिस. (2018) "***Muslim Eduaction Affecting factors in Gender Inequality in India",*** Journal of Development Policy and Practice.
- इन्टरनेट वेबसाइट्सः–
- www.josr.journal.org
- https//www.researchgate.net/publication

***